Journal Homepage: www.ijrpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 06, pp 414-419, June 2025

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. नरेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

Dr. Naresh Kumar

Assistant Professor, State Council of Educational Research and Training (SCERT), Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024

सारांश-

प्रस्तुत शोधालेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में भारत की समृद्ध बौद्धिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में पुनर्स्थापित करने के प्रयासों का एक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System – IKS) केवल प्राचीन ग्रंथों और धार्मिक मूल्यों तक सीमित नहीं है; अपितु यह एक जीवंत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो जीवन के समस्त आयामों– भौतिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आदि को समग्रता में समझने पर भी बल देती है। इसमें योग, आयुर्वेद, दर्शन, गणित, खगोलशास्त्र, संगीत, वास्तु, कृषि, जल प्रबंधन, चिकित्सा आदि जैसे विषय शामिल हैं जो आज भी वैश्विक संदर्भ में प्रासंगिक हैं। वास्तव में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के भारतीयकरण की दिशा में एक ऐसी ऐतिहासिक पहल है जो पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक शिक्षा के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। यह नीति स्पष्ट रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को स्कूली और उच्च शिक्षा दोनों स्तरों पर मुख्यधारा में शामिल करने की वकालत करती है। नीति के अंतर्गत कक्षा 6 से ही योग, स्थानीय भाषाओं, शास्त्रीय संगीत, भारतीय दर्शन, परंपरागत खेल, चिकित्सा पद्धतियाँ तथा पर्यावरणीय ज्ञान जैसे विषयों को परियोजना आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण के माध्यम से पढ़ाने का प्रस्ताव है। उच्च शिक्षा में भी भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) केंद्रों की स्थापना, शोध को प्रोत्साहन तथा शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे प्रावधान किए गए हैं। इस शोधालेख के अंतर्गत शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के समावेशन के संदर्भ में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान की गई है; जैसे– पाठ्यक्रम में एकीकरण की जटिलता, वैज्ञानिक साक्ष्य और शोध का अभाव, शिक्षकों की अपूर्ण तैयारी, संसाधनों की कमी और सामाजिक-राजनीतिक मतभेद आदि। इसके साथ ही इन समस्याओं के समाधान हेतु लेख डिजिटलीकरण, अभिलेखागार निर्माण, पांडुलिपियों के अनुवाद, शोध संस्थानों की स्थापना, डिजिटल शिक्षा मंचों का उपयोग, जन-जागरूकता अभियान और नीति-निर्माण में विविध विशेषज्ञों की भागीदारी जैसे ठोस सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत शोध लेख इस विचार को भी सुदृढ़ करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश केवल सांस्कृतिक पुनरुत्थान नहीं; अपितु भारत को एक ज्ञान-प्रधान, नैतिक और वैश्विक दृष्टि संपन्न राष्ट्र के रूप में पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में न केवल एक दूरदर्शी, समावेशी और क्रांतिकारी पहल है; बल्कि यह भारत को एक समरस, नैतिक, वैज्ञानिक एवं वैश्विक नेतृत्व देने वाले राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की आधारशिला भी है।

मुख्य शब्द- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा, स्कूली शिक्षा, भाषा, संस्कृति, मूल्य, प्रशिक्षण कार्यक्रम, समग्र दृष्टिकोण, सांस्कृतिक आत्मबोध*

प्रस्तावना-

भारत एक प्राचीन और समृद्ध सभ्यता वाला देश है जिसकी सांस्कृतिक, दार्शनिक और बौद्धिक परंपराएँ सहस्राब्दियों से विकसित होती रही हैं। यह देश केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं रहा; बल्कि इसकी आत्मा इसकी विचारशील परंपराओं, ज्ञान के भंडार और मूल्यों से परिभाषित होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System - IKS) वह नींव है जिसने न सिर्फ इस राष्ट्र की आत्मा को गढ़ा अपितु समूचे विश्व को भी एक दिशा देने का कार्य किया। भारत की ज्ञान परंपरा की शुरुआत वैदिक काल से मानी जाती है जहाँ वेद, उपनिषद, पुराण और विभिन्न प्रकार के दर्शन ग्रंथों में जीवन, ब्रह्मांड और मानवता के बारे में अत्यंत गहन और व्यापक विचार प्रस्तुत किए गए हैं। इस परंपरा में केवल आध्यात्मिक और धार्मिक चिंतन ही नहीं; अपितु गणित, ज्योतिष, चिकित्सा, खगोलशास्त्र, वास्तु, योग, संगीत, नाटक, राजनीति और शिक्षा जैसे अनेक विषयों पर गहराई से विचार किया गया। चरक और सुश्रुत की चिकित्सा प्रणाली, आर्यभट्ट और भास्कराचार्य की गणितीय अवधारणाएँ, पतंजलि का योगसूत्र और कौटिल्य का अर्थशास्त्र ये सभी भारतीय ज्ञान परंपरा की वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टि को प्रमाणित करते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा की एक अन्य विशेषता इसका समग्र और नैतिक दृष्टिकोण है। यहाँ ज्ञान केवल बौद्धिक या सूचनात्मक नहीं होता; बल्कि जीवन के उद्देश्य, नैतिकता, समाज सेवा और सार्वभौमिक कल्याण से जुड़ा होता है। इस परंपरा ने 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे विचारों के माध्यम से विश्व बंधुत्व का संदेश दिया है। आज 21वीं सदी में, जब भारत वैश्विक मंच पर नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर है तो यह आवश्यक हो गया है कि हम अपनी ज्ञान परंपरा को पुनः पहचानें, पुनर्जीवित करें और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उसका समावेश करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी दिशा में एक क्रांतिकारी और ऐतिहासिक कदम है। यह नीति भारत की शिक्षा प्रणाली को समकालीन वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्गठित करने के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने का प्रयास करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा: स्वरूप और विशेषताएँ

भारतीय ज्ञान परंपरा एक ऐसी समृद्ध विरासत है जो न केवल भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक चेतना को आकार देती है; अपितु समस्त मानवता के लिए एक सार्वभौमिक मार्गदर्शन भी प्रस्तुत करती है। यह परंपरा सहस्राब्दियों से सतत रूप से विकसित होती रही है और इसमें जीवन के प्रत्येक पक्ष– भौतिक, आध्यात्मिक, नैतिक, वैज्ञानिक और सामाजिक आदि का उचित समावेश मिलता है। इसके विविध आयाम इसकी गहराई और व्यापकता को दर्शाते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा की एक प्रमुख विशेषता इसका समग्र दृष्टिकोण (Holistic Approach) है। यहाँ ज्ञान को केवल तथ्यों या विषयवस्तु तक सीमित नहीं किया गया; बल्कि आत्मा, शरीर, मन, प्रकृति और समाज के बीच संतुलन को आधार मानकर समग्र जीवन को समझने का प्रयास किया गया है। यही कारण है कि योग, आयुर्वेद, वास्तु, धर्म और दर्शन जैसे विषयों में यह समग्रता स्पष्ट रूप से झलकती है।

इसकी दूसरी विशेषता है– अनुभवजन्य एवं आत्मसाक्षात्कार आधारित ज्ञान। भारतीय चिंतन परंपरा में ज्ञान को केवल पुस्तकीय अथवा सूचनात्मक नहीं माना गया; बल्कि ध्यान, साधना, तप और आत्मअनुभूति के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को श्रेष्ठ माना गया। उपनिषदों में "नेति नेति", "आत्मा वाअरे दृष्टव्यः" जैसे विचार दर्शाते हैं कि सत्य की प्राप्ति आंतरिक अनुभव से होती है। नैतिकता और मूल्यों का समावेश भी भारतीय ज्ञान प्रणाली की आधारशिला है। यहाँ ज्ञान को 'विज्ञानं सहितं धर्मं' के रूप में देखा गया है जिसमें कर्तव्य, संयम, सत्य, दया और समाजसेवा जैसे मानवीय गुणों को प्रमुखता दी गई है।

इसके अतिरिक्त, भारतीय परंपरा में शास्त्रों और दर्शनों की बहुलता देखने को मिलती है। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, आयुर्वेद, योग, न्याय, मीमांसा, सांख्य, वैशेषिक जैसे ग्रंथों और दर्शनों ने ज्ञान के विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं जिससे इसकी विवेकशीलता और बहुलतावाद सिद्ध होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा वास्तव में वैज्ञानिकता का प्रमाण है। आर्यभट्ट और भास्कराचार्य ने गणित में दशमलव और बीजगणित की अवधारणाएँ प्रस्तुत कीं, सुश्रुत और चरक ने चिकित्सा विज्ञान की आधारशिला रखी और वराहमिहिर जैसे विद्वानों ने खगोलशास्त्र में अग्रणी योगदान दिया। अत: यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल प्राचीन काल की उपलब्धि है; बल्कि आज के समय में भी इसकी उपयोगिता और प्रासंगिकता बनी हुई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020** और भारतीय ज्ञान परंपरा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक बदलाव का संकेत है। यह नीति न केवल आधुनिक वैश्विक चुनौतियों के अनुरूप शिक्षा प्रणाली को पुनः संगठित करने का प्रयास करती है; बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत, मूल्यों और ज्ञान परंपरा को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने की दिशा में भी एक सशक्त कदम है। यह नीति इस बात को भलीभाँति समझती है कि एक आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की नींव केवल तकनीकी और औद्योगिक प्रगति से नहीं; बल्कि सांस्कृतिक आत्मबोध और बौद्धिक स्वाधीनता से ही संभव है। इसी परिप्रेक्ष्य में नीति भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन को एक प्रमुख उद्देश्य के रूप में प्रस्तुत करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल धार्मिक या आध्यात्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं है; अपितु बल्कि यह गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, पर्यावरण, दर्शन, व्याकरण, राजनीति, संगीत, कला और वास्तुशास्त्र जैसे विषयों में गहन चिंतन और अनुसंधान की परंपरा है। यह परंपरा एक समग्र दृष्टिकोण के साथ मनुष्य, प्रकृति और ब्रह्मांड के बीच सामंजस्य की बात करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस परंपरा को पुनः स्थापित कर विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गर्व, आत्मसम्मान और नैतिक जिम्मेदारी का विकास करना चाहती है। नीति के दृष्टिकोण में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा प्रणाली में समाहित करने से विद्यार्थियों में स्वदेशी चेतना, सांस्कृतिक आत्मविश्वास और नैतिक दृष्टिकोण का विकास होगा। यह नीति इस बात को स्वीकार करती है कि भारतीय परंपरा में निहित वैज्ञानिकता, तार्किकता और सार्वभौमिकता आज भी समकालीन समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकती है। यह केवल अतीत के गौरवगान तक सीमित नहीं; बल्कि भविष्य की दिशा निर्धारण की भी शक्ति रखती है।

विद्यालयी शिक्षा के स्तर पर नीति यह सुनिश्चित करती है कि कक्षा 6 से ही भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों से छात्रों को परिचित कराया जाए। योग, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र, भारतीय गणित, संगीत, नृत्य, लोककला, शिल्प, दर्शन, संस्कृत और अन्य प्राचीन भाषाएँ जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा। यह केवल विषयों की सूची नहीं है; बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आरंभ है। पारंपरिक खेल, नाट्यशास्त्र, चरक-संहिता, पोषण और स्वास्थ्य परंपराओं को अनुभवात्मक और परियोजना आधारित शिक्षण विधियों द्वारा पढ़ाया जाएगा जिससे छात्रों में जिज्ञासा और अनुसंधान की भावना को बल मिलेगा।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। विश्वविद्यालयों में IKS से संबंधित विशेष विभागों और अनुसंधान केंद्रों की स्थापना की जाएगी। पारंपरिक विषयों; जैसे- दर्शन, तर्कशास्त्र, भारतीय इतिहास, संस्कृत व्याकरण, योगशास्त्र आदि को आधुनिक संदर्भों में पुनः व्याख्यायित किया जाएगा और इन पर आधारित पाठ्यक्रमों को विकसित किया जाएगा। यूजीसी और एआईसीटीई जैसे शैक्षणिक निकायों को निर्देशित किया गया है कि वे भारतीय परंपराओं को पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने हेतु दिशा-निर्देश जारी करें।

शोध और नवाचार को प्रोत्साहित करने हेतु नीति में "राष्ट्रीय अनुसंधान प्रतिष्ठान (National Research Foundation–NRF)" की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है जो न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी; बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा, भाषा, संस्कृति और सामाजिक विज्ञानों में भी शोध कार्य को संरचनात्मक और आर्थिक समर्थन प्रदान करेगा। यह शोध पारंपरिक जल प्रबंधन, कृषि प्रणाली, आयुर्वेद, शिक्षा पद्धति आदि क्षेत्रों में भारतीय दृष्टिकोण को आधुनिक समाधान के रूप में प्रस्तुत करेगा।

शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण की दिशा में भी नीति गंभीर है। शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा को अनिवार्य रूप से जोड़ा जाएगा। शिक्षकों को गुरु-शिष्य परंपरा, शास्त्रार्थ, कथावाचन, पठन-पाठन की पारंपरिक विधियों तथा ग्रंथों की गहन समझ प्रदान की जाएगी ताकि वे छात्रों को इन विषयों को आत्मसात कराने में सक्षम बन सकें। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE) द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का पुनर्गठन किया जाएगा।

अंततः, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल एक ऐतिहासिक स्मृति के रूप में नहीं देखती; अपितु उसे भविष्य के लिए एक व्यावहारिक, वैज्ञानिक, नैतिक और सांस्कृतिक दिशा-निर्देशक के रूप में पुनः स्थापित करने का प्रयास करती है। इस नीति के माध्यम से भारत न केवल वैश्विक शिक्षा मानकों की ओर अग्रसर होगा; बल्कि अपनी सांस्कृतिक अस्मिता और बौद्धिक आत्मनिर्भरता को भी पुनर्प्राप्त करेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वास्तव में एक ऐसा दस्तावेज़ है जो अतीत की गरिमा को वर्तमान की ज़रूरतों के साथ जोड़ते हुए भविष्य की एक नई दिशा प्रदान करता है।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System–IKS) न केवल भारत की सांस्कृतिक और दार्शनिक विरासत है; बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करने वाली एक समग्र दृष्टि भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से इस परंपरा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समाहित करने का प्रयास किया गया है। यह समावेश न केवल भारतीय शिक्षा को जड़ों से जोड़ता है; बल्कि उसे वैश्विक मंच पर भी विशिष्ट बनाता है। शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर इसके समावेश को विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है -

1. **प्रारंभिक और स्कूली शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश-** बचपन में बच्चों का व्यक्तित्व, मूल्यबोध और सांस्कृतिक चेतना विकसित होने लगती है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश प्रारंभिक स्तर से ही अत्यंत आवश्यक माना गया है। नीति के अनुसार, छोटे बच्चों को उनकी स्थानीय संस्कृति, परंपराओं, लोक कथाओं, लोकगीतों, पर्व-त्योहारों, रीति-रिवाजों और लोककला के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराया जाएगा। योग और ध्यान जैसे अभ्यासों को बच्चों की दिनचर्या में शामिल कर उनके शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित किया जाएगा। नीति की समग्र दृष्टिकोण वाली 'मल्टीडिसिप्लिनरी' शिक्षा प्रणाली में भारतीय पद्धति का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है जिसमें एक ही समय में विज्ञान, कला, संस्कृति, भाषा और नैतिकता को जोड़ा जाता है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों में करुणा, सहिष्णुता, अनुशासन और समाज के प्रति जिम्मेदारी जैसे गुणों का विकास किया जाएगा।

2. **उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश-** उच्च शिक्षा का स्तर किसी भी राष्ट्र के वैचारिक और शोधात्मक विकास का केंद्र होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह उल्लेखित किया गया है कि विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों एवं प्राचीन भाषाओं; जैसे- संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि को पुनर्जीवित करने हेतु शोध को प्रोत्साहित किया जाए। भारतीय न्यायशास्त्र, प्रशासनिक परंपराएं, नीति शास्त्र, भारतीय दर्शन, भाषा विज्ञान और शास्त्रीय साहित्य पर आधारित डिग्री और शोध कार्यक्रमों की योजना बनाई जाएगी। इसके अंतर्गत परंपरा और आधुनिकता के समन्वय पर भी विशेष बल दिया गया है; ताकि भारतीय दर्शन और ज्ञान-विज्ञान की अवधारणाओं को समकालीन संदर्भों में प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

3. **तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश-** तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रभाव बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विशेष योजनाओं को प्रस्तावित करती है। इसके अंतर्गत वास्तुशास्त्र, पारंपरिक कृषि प्रणाली, पर्यावरणीय विज्ञान, जल प्रबंधन और ग्रामोद्योग जैसे विषयों में भारतीय दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जाएगा। भारतीय चिकित्सा पद्धतियों; जैसे- आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी का वैज्ञानिक अध्ययन और आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ संवाद स्थापित करने की दिशा में प्रयास किए जाएंगे। इस प्रकार छात्रों को न केवल व्यावसायिक दक्षता प्राप्त होगी; बल्कि वे भारत की समृद्ध वैज्ञानिक और स्वास्थ्य परंपराओं के प्रति गर्व भी महसूस करेंगे।

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख क्षेत्र- भारतीय ज्ञान परंपरा अनेक क्षेत्रों में अद्वितीय उपलब्धियों से समृद्ध है-

- **भारतीय गणित:** शून्य की खोज, दशमलव पद्धति, बीजगणित, त्रिकोणमिति और ज्यामिति के क्षेत्र में आर्यभट्ट, भास्कराचार्य जैसे गणितज्ञों ने अतुलनीय योगदान दिया है।

- **आयुर्वेद एवं चिकित्सा:** चरक संहिता और सुश्रुत संहिता भारतीय चिकित्सा विज्ञान के ऐसे ग्रंथ हैं जो रोगों के निदान, उपचार और शल्यचिकित्सा के लिए आज भी उपयोगी हैं।

- **योग और ध्यान:** भारतीय दर्शन का अभिन्न अंग योग और ध्यान आज पूरी दुनिया में मानसिक शांति, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक विकास का प्रभावी साधन बन चुका है।

- **भारतीय दर्शन:** अद्वैत वेदांत, सांख्य, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक जैसे दर्शनों ने न केवल भारतीय चिंतन को परिभाषित किया; बल्कि वैश्विक बौद्धिक विमर्श को भी समृद्ध किया।

- **कला, संगीत और साहित्य:** भरतनाट्यम, कथक, कथकली, नाट्यशास्त्र, शास्त्रीय संगीत और संस्कृत साहित्य ये सभी न केवल सौंदर्यबोध और रचनात्मकता के प्रतीक हैं; अपितु इनमें भारतीय ज्ञान का गहन दर्शन भी समाहित है।

वास्तव में भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा प्रणाली में समावेश न केवल सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम है; बल्कि यह शिक्षा को अधिक आत्मनिर्भर, आत्मबोधी और मूल्यों पर आधारित बनाने की दिशा में एक सार्थक प्रयास भी है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक आशाजनक और दूरदर्शी नीति के रूप में उभरती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन की प्रमुख चुनौतियाँ

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System–IKS) हजारों वर्षों से भारत की सांस्कृतिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और सामाजिक धरोहर का प्रतिनिधित्व करती रही है। यह परंपरा न केवल आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित है; बल्कि इसमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र, दर्शन, वास्तु, कृषि, शिक्षा आदि के अद्भुत एवं प्रमाणिक स्वरूप भी समाहित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत इस परंपरा को मुख्यधारा की शिक्षा में स्थान देने का प्रयास किया गया है, किंतु इसके समावेशन की प्रक्रिया में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। नीचे कुछ प्रमुख चुनौतियों को वर्णित किया गया है-

1. **पाठ्यचर्या में समावेशन की कठिनाई-** वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली लगभग पूरी तरह से औपनिवेशिक और पश्चिमी ढांचे पर आधारित है। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के लिए समुचित स्थान नहीं रहा है। पाठ्यपुस्तकों, पाठ्यक्रमों और मूल्यांकन पद्धतियों को इस प्रकार से विकसित किया गया है कि उनमें भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश की संभावनाएँ सीमित हैं। इसके लिए पाठ्यचर्या के पुनर्गठन की आवश्यकता है जो व्यावहारिक रूप से जटिल प्रक्रिया है।

2. **शोध की कमी और दस्तावेजीकरण का अभाव-** भारतीय ज्ञान परंपरा का बड़ा भाग अब भी मौखिक रूप में है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी परंपरागत ढंग से चला आ रहा है। ऐसे कई ज्ञान क्षेत्र; जैसे- लोक चिकित्सा, कृषि पद्धतियाँ, रीति-रिवाज़, हस्तकला इत्यादि अब भी वैज्ञानिक रूप में दस्तावेज नहीं हो पाए हैं। इससे प्रमाणिकता और अकादमिक संदर्भों में इनकी मान्यता बाधित होती है।

3. **वैज्ञानिक मान्यता में कमी-** आधुनिक वैज्ञानिक समुदाय का एक वर्ग भारतीय परंपराओं को केवल रूढ़िवादी या अलौकिक मानकर अस्वीकार करता है। उनके अनुसार यदि कोई सिद्धांत प्रयोगशाला में दोहराया न जा सके या आधुनिक पद्धति से सिद्ध न किया जा सके तो वह वैज्ञानिक नहीं है। इस सोच के कारण भारतीय ज्ञान परंपरा को अकादमिक रूप से वह मान्यता नहीं मिल पाती जो अन्य वैश्विक सिद्धांतों को प्राप्त होती है।

4. **शिक्षकों की जानकारी और प्रशिक्षण की कमी-** शिक्षकों का एक बड़ा वर्ग भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के मूलभूत तत्वों से अनभिज्ञ है। उन्हें इसके ऐतिहासिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक पक्षों की पर्याप्त जानकारी नहीं है। यदि शिक्षक ही इस परंपरा को न समझ सकें तो उसे विद्यार्थियों तक प्रभावी रूप से नहीं पहुँचाया जा सकता।

5. **शैक्षिक संस्थानों में संसाधनों की कमी-** विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन-अध्यापन हेतु आवश्यक पुस्तकालय सामग्री, डिजिटल संसाधन, विशेषज्ञ शिक्षक, लैबोरेटरी आदि की भारी कमी है। इसके कारण इस क्षेत्र का शिक्षण व्यवहारिक रूप से सीमित रह जाता है।

6. **अभिभावकों और विद्यार्थियों में जागरूकता की कमी-** वर्तमान शिक्षा प्रणाली अधिकतर नौकरी या करियर-केंद्रित है। अभिभावक और विद्यार्थी ऐसे विषयों को प्राथमिकता देते हैं जिनसे उन्हें सीधा आर्थिक लाभ या रोजगार की संभावना दिखाई दे। भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को आज भी 'पुरानी बातें' या 'दर्शन आधारित विचार' समझा जाता है जिससे इसकी प्रासंगिकता कम आंकी जाती है।

7. **पारंपरिक भाषाओं की उपेक्षा-** भारतीय ज्ञान परंपरा का अधिकांश भाग संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश जैसी भाषाओं में उपलब्ध है। इन भाषाओं का अध्ययन और शिक्षण आज बहुत कम हो गया है। इस कारण प्राचीन शास्त्रों और ग्रंथों को समझना और उन पर शोध करना काफी कठिन हो गया है।

8. **विषय के सीमित शिक्षक एवं विशेषज्ञ-** भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को गहराई से पढ़ा और पढ़ाया जा सके इस संदर्भ में विषय विशेषज्ञों की भारी कमी है। विशेष रूप से आधुनिक संदर्भों में भारतीय ज्ञान परंपरा की व्याख्या और अध्यापन के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुपलब्धता एक बहुत बड़ी बाधा अथवा चुनौती है।

9. **समकालीन संदर्भों से जुड़ाव की कमी-** वर्तमान में एक अन्य चुनौती समकालीन संदर्भों से जुड़ाव की कमी है। विद्यार्थियों को यह समझाने में कठिनाई होती है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आज के भौतिकवादी जीवन में कैसे उपयोगी है। जब तक इसका आधुनिक जीवन से संबंध न स्थापित किया जाए तब तक यह केवल एक ऐतिहासिक ज्ञान की तरह ही मानी जाएगी।

10. **राजनीतिक और वैचारिक मतभेद-** भारतीय ज्ञान परंपरा को लेकर अकादमिक और वैचारिक जगत में मतभेद हैं। कई बार इसके समावेशन को राजनीतिक एजेंडा मान लिया जाता है जिससे निष्पक्ष और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसकी समझ विकसित नहीं हो पाती। यह स्थिति इसके समावेश की दिशा में एक बड़ी बाधा है।

अत: उपरोक्त चुनौतियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल करना एक आवश्यक, किन्तु चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसके लिए दीर्घकालिक नीति, विशेषज्ञता, संसाधन और सबसे अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यदि इन चुनौतियों का समाधान किया जाए तो भारतीय ज्ञान परंपरा भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर एक विशिष्ट पहचान दिला सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन की संभावनाएँ और समाधान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System - IKS) को शिक्षा की मुख्यधारा में पुनः स्थापित करने की दिशा में एक सकारात्मक पहल की है। यद्यपि इसके समावेशन में अनेक चुनौतियाँ हैं फिर भी इनके समाधान और संभावनाएँ भी उतनी ही व्यापक और दूरगामी हैं। यदि रणनीतिक रूप से प्रयास किए जाएं तो भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल भारत की सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करेगी; अपितु वैश्विक स्तर पर भी भारत की बौद्धिक पहचान को सशक्त बनाएगी। नीचे भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन की संभावनाओं और समाधानों को वर्णित किया गया है-

1. **डिजिटलीकरण और अभिलेखागार निर्माण-** पारंपरिक ग्रंथ, पांडुलिपियाँ, शास्त्र और लोकज्ञान जो अभी तक पुस्तकालयों, ऐतिहासिक स्थलों या व्यक्तिगत संग्रहों आदि में सीमित हैं उनका व्यापक डिजिटलीकरण आवश्यक है। इससे वे आसानी से शोधकर्ताओं, छात्रों और शिक्षकों के लिए सुलभ होंगे। इस सामग्री को विषयानुसार वर्गीकृत कर डिजिटल पुस्तकालयों में संग्रहीत किया जा सकता है जिससे यह एक अमूल्य ज्ञान संसाधन बना सकेगा और भविष्य की पीढ़ियाँ उससे लाभान्वित होंगी।

2. **अनुवाद और व्याख्या की परियोजनाएँ-** भारतीय ज्ञान परंपरा के अधिकांश ग्रंथ संस्कृत, पालि, प्राकृत, फारसी आदि में हैं। इनका आधुनिक भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में अनुवाद आवश्यक है। इसके साथ ही इन ग्रंथों की समकालीन व्याख्या भी की जानी चाहिए ताकि आधुनिक संदर्भों में उनका अर्थ स्पष्ट हो सके। यह प्रयास छात्रों, शोधकर्ताओं और आम जनता के बीच भारतीय ज्ञान परंपरा की पहुँच और समझ दोनों को बढ़ाएगा।

3. **विशेषीकृत अनुसंधान संस्थानों की स्थापना-** IITs, IIMs, AIIMS एवं केंद्रीय विश्वविद्यालयों आदि में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) पर केंद्रित शोध एवं नवाचार केंद्रों की स्थापना की जानी चाहिए। इन संस्थानों में अंतरविषयक (Interdisciplinary) अनुसंधान को बढ़ावा देकर विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, पर्यावरण और प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में भारतीय दृष्टिकोण से नए समाधान प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

4. **शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम-** भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण अनिवार्य है। राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE) को भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) आधारित विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम विकसित करने चाहिए जिनमें गुरु-शिष्य परंपरा, प्राचीन शिक्षण पद्धतियाँ, भारतीय दर्शन, योग आदि को समकालीन दृष्टिकोण से पढ़ाया जाए।

5. **पाठ्यक्रम में परियोजना आधारित समावेश-** कक्षा 6 से 12 तक के छात्रों के लिए IKS आधारित विषयों को परियोजना आधारित शिक्षा के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है। उदाहरण के लिए – योग पर स्वास्थ्य परियोजना, आयुर्वेदिक पौधों पर विज्ञान गतिविधि, नाट्यशास्त्र आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुति आदि। इससे छात्रों में जिज्ञासा, रचनात्मकता और संस्कृति के प्रति लगाव उत्पन्न होगा।

6. **ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स का उपयोग-** डिजिटल शिक्षा के बढ़ते प्रभाव को ध्यान में रखते हुए DIKSHA, SWAYAM, NPTEL जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर IKS आधारित कोर्स, वीडियो लेक्चर, क्विज़, प्रमाणन कार्यक्रम विकसित किए जाएं। इससे छात्र और शिक्षक दोनों लचीलापन के साथ इस ज्ञान को ग्रहण कर सकते हैं।

7. **अंतरराष्ट्रीय सहयोग और संवाद-** विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों; जैसे- हार्वर्ड, ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज आदि के साथ साझेदारी कर भारतीय ज्ञान परंपरा की वैज्ञानिकता और वैश्विक प्रासंगिकता को उजागर किया जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, व्याख्यान श्रृंखलाओं और शोध परियोजनाओं के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को वैश्विक शिक्षा विमर्श का हिस्सा बनाया जा सकता है।

8. **जन-जागरूकता अभियान-** समाज में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपयोगिता और महत्व को लेकर जागरूकता आवश्यक है। इसके लिए टेलीविज़न, रेडियो, सोशल मीडिया, डॉक्यूमेंट्री फिल्म्स, शैक्षिक प्रदर्शनियों और पुस्तकों के माध्यम से आम नागरिकों तक संदेश पहुँचाया जा सकता है। इससे भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को 'सिर्फ पुरानी परंपरा' न मानकर समकालीन शिक्षा का आवश्यक हिस्सा माना जाएगा।

9. **साक्ष्य आधारित शोध को प्रोत्साहन-** आयुर्वेद, योग, वास्तु, पारंपरिक कृषि प्रणाली, मौसम विज्ञान आदि क्षेत्रों में साक्ष्य आधारित वैज्ञानिक शोध को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इसके लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), राष्ट्रीय अनुसंधान प्रतिष्ठान (NRF) और अन्य निकायों को वित्तीय और संस्थागत समर्थन प्रदान करना चाहिए।

10. **नीति निर्माण में विविध दृष्टिकोणों का समावेश-** शिक्षा नीतियों के निर्माण में केवल सरकारी अधिकारी ही नहीं, बल्कि परंपरागत विद्वानों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और सामाजिक संगठनों की भागीदारी होनी चाहिए। इससे नीति निर्माण में विविधता आएगी और भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का समावेश संतुलित, व्यावहारिक और सर्वमान्य रूप से स्वीकार्य होगा।

अत: इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि यदि उपरोक्त बिंदुओं को योजनाबद्ध ढंग से कार्यान्वित किया जाए तो भारतीय ज्ञान परंपरा को न केवल शिक्षा व्यवस्था में सार्थक रूप से जोड़ा जा सकता है; बल्कि यह भारत को वैश्विक स्तर पर एक वैकल्पिक बौद्धिक मार्गदर्शक के रूप में भी प्रस्तुत कर सकती है।

निष्कर्ष-

उपरोक्त विवेचना के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System-IKS) भारत की हजारों वर्षों पुरानी बौद्धिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है जिसमें जीवन के प्रत्येक पक्ष को समग्र दृष्टिकोण से समझने और विकसित करने की क्षमता निहित है। यह परंपरा केवल ज्ञान का संचयन नहीं है; अपितु ज्ञान को आचरण में उतारने, नैतिक मूल्यों को विकसित करने, पर्यावरण के साथ सहजीवन की भावना स्थापित करने और समाज के समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त करने वाली एक जीवंत प्रणाली है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस पारंपरिक ज्ञान को पुनर्जीवित करने का एक ऐतिहासिक अवसर प्रदान करती है। यह नीति न केवल भारतीयता को शिक्षा के केंद्र में लाने का प्रयास करती है; बल्कि वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए स्थानीय और पारंपरिक दृष्टिकोणों की भूमिका को भी मान्यता देती है। नीति में उल्लेखित बहु-विषयी शिक्षा (Multidisciplinary Education), मातृभाषा में शिक्षण, नैतिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा का समावेश, योग और आयुर्वेद जैसे भारतीय अनुशासनों का पाठ्यक्रम में स्थान ये संकेत करते हैं कि भारत एक समग्र, समावेशी और मूल्य-आधारित शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

हालांकि, इसके समावेशन में अनेक चुनौतियाँ भी हैं; जैसे- पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का संतुलित समावेश, वैज्ञानिक मान्यता, प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता और छात्रों में रुचि का निर्माण। लेकिन इन चुनौतियों से निपटने के लिए राष्ट्रीय और संस्थागत स्तर पर जो उपाय किए जा रहे हैं; जैसे- डिजिटलीकरण, अनुवाद परियोजनाएँ, विशेष शोध संस्थानों की स्थापना और डिजिटल शिक्षा प्लेटफॉर्म्स का उपयोग वे अत्यंत आशाजनक हैं। अत: अंत में यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश केवल एक शैक्षणिक आवश्यकता नहीं है; अपितु यह भारत की आत्मा को पुनः शिक्षा में प्रतिष्ठित करने का प्रयास है। जब भारतीय छात्र अपने ज्ञान की जड़ों से जुड़ेंगे; तभी वे आत्मविश्वासी, नवाचारी और विश्व-स्तरीय नागरिक बन सकेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक सशक्त नींव रखती है और यह आशा की जा सकती है कि आने वाले वर्षों में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) न केवल भारतीय शिक्षा का अंग बनेगी; अपितु बल्कि वैश्विक ज्ञान परिदृश्य को भी समृद्ध करेगी।

ग्रंथ सूची/संदर्भ

1. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
2. त्रिपाठी, ओ. पी. (2018). *भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा*. वाराणसी: भारतीय विद्या संस्थान।
3. मिश्र, रामचंद्र. (2019). *प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति*. लखनऊ: भारतीय बुक डिपो।
4. चतुर्वेदी, एम. के. (2015). *भारतीय ज्ञान परंपरा का वैज्ञानिक मूल्यांकन*. बनारस: ज्ञानगंगा प्रकाशन।
5. https://www.education.gov.in/
6. https://ncte.gov.in/website/index.aspx
7. https://ijrpr.com/uploads/V5ISSUE12/IJRPR36716.pdf
8. https://www.education.gov.in/nep/indian-knowledge-systems
9. https://www.researchgate.net/publication/390478286_Indian_Knowledge_System_IKS_and_National_Education_Policy_NEP-2020